तान

स्वरों का वह समूह, जिसके द्वारा राग-विस्तार किया जाता है, 'तान' कहलाता है; जैसे—'सा रे ग म, ग रे सा' अथवा 'सां नि ध प म ग रे सा' इत्यादि। स्वरों को तानने या फैलाने से ही 'तान' शब्द की उत्पत्ति हुई है। तानों के निम्न लिखित प्रकार हैं—

शुद्ध तान

जिस तान में स्वरों का क्रम एकसा हो और आरोह-अवरोह सीधा-सीधा हो, उसे 'शुद्ध तान' कहते हैं; जैसे—'सा रे ग म प ध नि सां' 'सां नि ध प म ग रे सा।' इसे 'सपाट तान' भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

कूट तान

जिस तान में स्वरों का क्रम या सिलसिला स्पष्ट प्रतीत न हो, उसे 'कूट तान' कहेंगे। यह हमेशा टेढ़ी-मेढ़ी चलती है; जैसे—'सारे गरे धप मप रेग मप धसां धप' इत्यादि।

मिश्र तान

'शुद्ध तान' और 'कूट तान', इन दोनों का जिसमें मिलाप या मिश्रण हो, उसे 'मिश्र तान' कहेंगे; जैसे—'प ध नि सां ग म प ध प म प ग म रे सा'। इसमें 'कूट तान' और 'शुद्ध तान' दोनों मिली हुई हैं।

खटके की तान

स्वरों पर धक्का लगाते हुए तान ली जाए, तो उसे 'खटके की तान' कहेंगे।

झटके की तान

जब तान दुगुनी चाल में जा रही हो और यकायक बीच में चौगुन की चाल में जाने लगे, तो उसे 'झटके की तान' कहेंगे; जैसे—'सा रे ग म प ध नि सां नि ध प म' सारे गम पधनिसां निधपम गरेसानि'।

वक्र तान

यह 'कूट तान' के ही समान होती है। वक्र का अर्थ है टेढ़ा, अर्थात् जिसकी चाल सीधी न हो, जिसमें स्वरों का कोई क्रम न हो।

अचरक तान

जिस तान में प्रत्येक दो स्वर एकसे बोले जाएँ; जैसे– 'सासा रेरे गग मम पप धध'। इसे 'अचरक की तान' कहेंगे।

सरोक तान

जिस तान में चार-चार स्वर एकसाथ सिलसिलेवार कहे जाएँ; जैसे—'सारेगम रेगमप गमपध मपधनि'। इसे 'सरोक तान' कहेंगे।

लड़ंत तान

जिस तान में सीधी-आड़ी कई प्रकार की लय मिली हुई हों तो उसे 'लड़ंत तान' कहते हैं; जैसे—'निसा निसा रे रे रे रे निध निध सा सा सा सा' इत्यादि। इन तानों में गायक और वादक की लड़ंत बड़ी मज़ेदार होती है।

सपाट तान

जिस तान में क्रमानुसार स्वर तेज़ी के साथ जाते हों, उसे 'सपाट तान' कहते हैं; उदाहरणार्थ—'मपधनि सारेगम पधनिसां रेंगमंपं' इत्यादि।

Scanned with CamScanner

गिटकरी तान

दो स्वरों को एकसाथ शीघ्रता से एक के पीछे दूसरा लगाते हुए यह तान ली जाती है; जैसे—'निसा निसा सारे सारे रेग रेग गम गम मप मप पध पध निसां निसां' इत्यादि।

जबड़े की तान

कंठ के अंतस्तल से आवाज़ निकालकर जबड़े की सहायता से जब तान ली जाती है, तो उसे 'जबड़े की तान' कहते हैं। यह मुश्किल होती है और सुलझे हुए गायक ही ऐसी तान प्रस्तुत करने में समर्थ होते हैं।

हलक़-तान

जीभ को क्रमानुसार भीतर-बाहर ले जाते हुए 'हलक़-तान' ली जाती है।

पलट-तान

किसी तान को लेते हुए अवरोह करके लौट आने को 'पलट-तान' या 'पलटा-तान' कहते हैं; यथा—सांनिधप मगरेसा।

बोल-तान

जिन तानों में तान के साथ-साथ गीत के बोल भी मिलाकर विलंबित, मध्य और द्रुत, आवश्यकतानुसार ऐसी तीन लयों में गाए जाते हैं, वे 'बोल-तानें' कहलाती हैं; जैसे—गमं रेसा मंध मंप
गुनि जन गाऽ वत

आलाप

गायक जब अपना गाना आरंभ करता है, तो राग के अनुसार उसके स्वरों को विलंबित लय में फैलाकर यह दिखाता है कि कौन सा राग गा रहा है। आलाप को स्वर-विस्तार भी कहते हैं; जैसे—बिलावल का स्वर-विस्तार इस प्रकार शुरू करेंगे—'ग ऽ, रे ऽ, सा ऽ सा, रे सा ऽ ग ऽ म ग प ऽ म ग, म रे, सा ऽ ऽ ऽ इत्यादि।

बढ़त

जब कोई गायक, गाना गाते समय एक-एक या दो-दो स्वरों को लेते हुए या छोटे-छोटे स्वर-समुदायों से बढ़ते हुए बड़े-बड़े स्वर-समुदायों पर आकर लय को धीरे-धीरे बढ़ाता है और फिर 'बोल-तान' गमक इत्यादि का प्रयोग करता है, तब उसे 'बढ़त' कहते हैं।

Scanned with CamScanner